प्रकाशन

अकादेमी के प्रकाशन कार्यक्रम के अंतर्गत, जो कि वर्ष 1953 में अकादेमी की स्थापना के तुरंत बाद शुरू किया गया था, प्रदर्शनकारी कलाओं पर पुस्तकें तथा मोनोग्राफ, त्रैमासिक पत्रिका 'संगीत नाटक' का प्रकाशन सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त 'संगीत, नृत्य' और नाटक संबंधी प्रकाशनों के संवर्धन के लिए अकादेमी इनके लेखकों और प्रकाशकों को अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं की पुस्तकों और पत्रिकाओं के लिए अनुदान प्रदान करके सहायता करती है। अकादेमी के प्रकाशनों की सूची परिशिष्ट-V पर दी गई है। संगीत नाटक खंड 37, अंक 1 और 2 इस रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान प्रकाशित किए गए थे।

निम्न प्रदर्शनकारी कला पत्रिकाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की गई थी -

श्रुति (1,00,000 रु.); नर्तनम(60,000 रु.); जर्नल ऑफ इंडियन म्यूजिकोलॉजिकल सोसाइटी (25,000 रु.); नटरंग (30,000 रु.); इमतावर्त (30,000 रु.); बहुरूपी (25,000 रु.); सयक नाट्यपत्र (22,000 रु.); असमायेर नाट्य भावना (25,000 रु.); नाटक बूद्रेती (40,000 रु.); मूकभिनय (10,000 रु.); पपेट (10,000 रु.); विश्व-बीना (8,000 रु.) लोकवार्ता शोध पत्रिका (35,000 रु.)।

इस अवधि के दौरान, निम्न व्यक्तियों को पुस्तकों के प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की गई : भारतीय नृत्य की वर्णमाला : हस्तमुद्राएँ (हिंदी); विभा दधीच, रु. 25,000/- औनिआती सतरता गितारा तालः दिलीप चांगकाकोटी (असमिया); रु. 60,000/-

प्रलेखन

वर्ष 2003-04 की अवधि में, अकादेमी के अभिलेखागार में 12,510 श्वेत श्याम एवं रंगीन फोटोग्राफ, 400 रंगीन स्लाइड, 415 घंटे 45 मिनट की वीडियो रिकार्डिंग एवं 58 घंटे 35 मिनट की वीडियो रिकार्डिंग को जोड़ा गया है।

दिसंबर, 2004 तक अभिलेखागार में 1,70,777 फोटोग्राफ, 40,243 रंगीन स्लाइड, 4951 घंटों की वीडियो रिकार्डिंग और 6737 घंटे 57 मिनट की ऑडियो रिकार्डिंग एवं लगभग 1.44 लाख फीट की 16 एमएम वाली फिल्म सामग्री थी।

गत वर्षों में संगीत नाटक अकादेमी ने प्रदर्शनकारी कलाओं पर ऑडियो/वीडियो टेपों, फोटोग्राफ और फिल्मों का एक बड़ा अभिलेखागार तैयार किया है। वर्ष 1981 से इसमें वीडियो टेपों को भी शामिल किया है। संग्रहित सामग्री का प्रचार श्रव्य-दृश्य को सुनने एवं देखने की व्यवस्था, संगीत के ध्वन्यांकन एवं पुनरांकन और फिल्म प्रोजेक्शन द्वारा किया जाता है। प्रकाशनों, फिल्मों और दूरदर्शन के साथ-साथ भारत की प्रदर्शनकारी कलाओं के अनुसंधान कार्यों में अकादेमी के अभिलेखागार की सामग्री का व्यापक रूप से उपयोग किया गया है।

वर्ष के दौरान की गई ऑडियो/वीडियो रिकार्डिंग की सूची परिशिष्ट-VI में दी गई है।

संग्रहालय

वर्ष 1953 में अपने स्थापना काल से ही अकादेमी प्रदर्शनकारी कलाओं से संबंधित वस्तुओं और कलाकृतियों का संग्रह करती आ रही है। प्राथमिक रूप में, इस संग्रह के आधार पर वर्ष 1964 में जनता के लिए संगीत वाद्य-यंत्र की दीर्घा को रवीन्द्र भवन के भूतल पर खोला गया था। इसका उद्घाटन प्रख्यात वायलिन वादक येहूदी मेंनूहिन द्वारा किया गया था। अत्यधिक रूप से सामग्री के संग्रहण का कार्य वर्ष 1968 में दिल्ली में आयोजित संगीत वाद्य-यंत्रों की मुख्य प्रदर्शनी के समय से ही प्रारंभ हुआ। अन्य संबंधित सामग्री से अलग संग्रहालय में अब लगभग 1600 कलाकृतियाँ हैं जिनमें से कुछ कलाकृतियों का वाद्य-यंत्र दीर्घा में प्रतिनिधिक स्थायी प्रदर्शन किया गया है। संग्रह में प्रदर्शनकारी कलाओं से संबंधित संगीत वाद्य-यंत्र, मुखौटे, पुतलियाँ, हेडगियर, पोशाकें और हस्तकृतियाँ जैसी सामग्री के अलावा कुछ संगीत वाद्य-यंत्र हैं, जो अन्य देशों से उपहार के रूप में प्राप्त हुए है। संग्रहालय अनुसंधानकर्त्ताओं, छात्रों, संगीतशास्त्रियों, संगीतज्ञों आदि की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

पुस्तकालय एवं श्रव्य-दृश्य लाइब्रेरी

पिछले कई वर्षों में अकादेमी के पुस्तकालय में प्रदर्शनकारी कलाओं पर पुस्तकों का एक विशिष्ट संग्रह किया गया है, इसमें से बहुत-सी पुस्तकें ऐसी हैं, जो या तो दुर्लभ हैं या

अप्राप्य हैं। विशेष रूप से प्रदर्शनकारी कलाओं के छात्रों और अनुसंधानकर्त्ताओं की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पुस्तकालय में देश-विदेश की लगभग 150 पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। पुस्तकालय में अब उपहारस्वरूप प्राप्त 703 पुस्तकों के अतिरिक्त कुल पुस्तकों की संख्या 22,646 है। श्रव्य/दृश्य लाइब्रेरी के संग्रह में अब 9722 डिस्क, अकादेमी के अभिलेखागार से प्राप्त 761 प्री-रिकार्डेड कैसेट, नृत्य, नाटक और संगीत के 92 वीडियो कैसेट, 1602 व्यावसायिक ऑडियो कैसेट, 148 उपहार में प्राप्त ऑडियो कैसेट और 835 कम्पैक्ट डिस्क और भारतीय संगीत के 2 उपहार में प्राप्त कम्पैक्ट डिस्क, 32 कम्पैक्ट डिस्क एवं 2 वीडियो कम्पैक्ट डिस्क शामिल है।

इसकी सदस्यता संख्या 837 हो गई है और चरणबद्ध तरीके से लाईब्रेरी सेवाओं को आधुनिक बनाने के लिए लिबसिस सॉफ्टवेयर के साथ कंप्यूटर लगाए गए हैं।

सांस्कृतिक संस्थाओं और व्यक्तियों को अनुदान

अकादेमी अपने स्थापना काल से ही संगीत, नृत्य और नाटक से जुड़ी संस्थाओं और व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करती आ रही है। अनुदान समिति ने अपनी 22 और 23 सितंबर, 2003 की बैठक में 548 आवेदन पत्रों पर विचार करके 55.91 लाख रुपए की राशि 300 सांस्कृतिक संस्थाओं को (परिशिष्ट-VII) संस्वीकृत की। इसके अतिरिक्त 2.70 लाख रुपए की राशि 12 पुतुल दलों को (परिशिष्ट-VIII) प्रशिक्षण, प्रस्तुतियों और तकनीकी उपस्करों की खरीद आदि के लिए संस्वीकृत की।

अंतर-राज्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

अकादेमी का अंतर-राज्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम सन् 1981 से चालू है। इस योजना के तहत अकादेमी देश के विभिन्न राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के बीच चुने हुए कलाकारों और कलाकार समूहों के आदान-प्रदान का समन्वय करती है और उसे आर्थिक सहायता भी देती है। संगीत नाटक अकादेमी और राज्यों के बीच वित्तीय दायित्व 1:1 अनुपात का है। तथापि, उत्तर-पूर्वी राज्यों, सिक्किम और जम्मू एवं कश्मीर राज्यों द्वारा व्यय की गई राशि के लिए अकादेमी शतप्रतिशत आर्थिक सहायता प्रदान करती है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष के दौरान किए गए आदान-प्रदान का विवरण परिशिष्ट-IV में दिया गया है।

भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम

द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम का कार्यान्वयन अकादेमी द्वारा संस्कृति विभाग द्वारा किए गए निर्णयों के अनुसार किया जाता है। इसमें प्रमुख रूप से प्रदर्शनकारी कलाओं से संबंधित सूचना और सामग्री यथा पुस्तकें, टेपों आदि का आदान-प्रदान सम्मिलित है। तथापि स्वर्ण जयंती समारोहों के तहत अकादेमी ने मिस्र और उजबेकिस्तान में वाद्य-यंत्र प्रदर्शनियाँ प्रायोजित कीं।

प्रायोजित कार्यक्रम

अकादेमी ने विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं के सहयोगी समझौते के तहत देश के विभिन्न भागों में निम्न कार्यक्रमों को आंशिक रूप से प्रायोजित किया :

- अकादेमी ने चक्रधर समारोह, 2003 के लिए 9 सितंबर, 2003 को राजगढ़ में श्री सुभद्र राव द्वारा सितारवादन को प्रायोजित किया और श्री राव को रु. 25,000 की समेकित फीस प्रदान की।
- गंधर्व महाविद्यालय, दिल्ली को प्रख्यात गायक श्री दिनकर कैकिनी द्वारा दिल्ली में आगरा घराना के संगीत की कार्यशाला आयोजित करने के लिए उस पर होने वाले व्यय को वहन करने के लिए रु. 25,000 का अनुदान दिया गया।
- अकादेमी ने 16 से 22 फरवरी, 2004 तक आयोजित जल उत्सव के लिए इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली के साथ सहयोग किया। अकादेमी ने दो कार्यक्रम प्रायोजित किए : टी. वी. समबासिवन और दल द्वारा 16 फरवरी, 2004 को केरल का वांचिपट्टू का कार्यक्रम और पश्चिम बंगाल के भटियाली गीतों का कार्यक्रम श्री अमर पाल एंड दल ने प्रस्तुत किया। अकादेमी ने इन दोनों कार्यक्रमों को प्रायोजित किया और व्यय को वहन करने के लिए तीस-तीस हज़ार रुपए की राशि प्रदान की गई।
- अकादेमी ने 29 जुलाई, 2003 को ध्वनि, दिल्ली द्वारा व्याख्यान-निदर्शन की नतून कमलाबारी सत्र 'पहचान' शृंखला द्वारा सत्रिय नृत्य के प्रदर्शन को

प्रायोजित किया।

- 1 और 2 अगस्त, 2003 को नालंदा रिसर्च सेंटर, मुंबई में कुमुदिनी लाखिया और उनके छात्रों द्वारा व्याख्यान-निदर्शन को प्रायोजित किया।
- भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा आयोजित कृष्ण उत्सवः मणिपुरी रास - जेएनएमडीए; सत्रिय - घनकांत बरा; छऊ - मयूरभंज और सराईकेला - अगस्त 25 से 29, 2003।
- हैदराबाद में नवरात्रि उत्सव : 28 सितंबर से 5 अक्तूबर, 2003 तक सरकारी छऊ नृत्य केंद्र द्वारा सराईकेला छऊ नृत्य प्रायोजित किया गया।
- लोक प्रशासन के लिए पूर्वी क्षेत्रीय संगठन का सम्मेलन (इरोपा) : रंजना गौहर द्वारा ओडिसी नृत्य, गीतांजलि लाल द्वारा कथक नृत्यरचना, और मुराद और फतेह अली खान द्वारा सारंगी का आयोजन किया गया।
- *सत्रिय दल* : 1 से 3 नवंबर, 2003 को एल टी जी, दिल्ली में श्रीमंत फाउंडेशन फार कल्चर एंड सोसायटी द्वारा शंकरदेव पर राष्ट्रीय परिसंवाद।
- कार्तिक फाइन आर्ट्स, चैन्नई द्वारा नाट्य दर्शन-।। : 22 से 23 दिसंबर, 2003 को मणिपुरी जोगोई मारुप, इम्फाल (प्रदर्शन और व्याख्यान- निदर्शन)

रत्न सदस्यता और सम्मान प्राप्त कलाकारों को वित्तीय सहायता

रत्न सदस्यता और सम्मान प्राप्त करने वालों को वित्तीय सहायता योजना और उत्सवों के लिए वित्तीय सहायता योजना के अंतर्गत अकादेमी पूरे देश में विभिन्न उत्सवों में अकादेमी से सम्मान प्राप्त करने वाले कलाकारों को प्रायोजित करती है।

सम्मान प्राप्त कलाकारों के लिए ग्रुप मेडिक्लेम बीमा पॉलिसी

अकादेमी ने सन् 1992 में अपने रत्न सदस्यों और सम्मान प्राप्त करने वाले कलाकारों के लिए ग्रुप मेडिक्लेम बीमा पॉलिसी की शुरुआत की। इस योजना के अन्तर्गत आने वाले रत्न सदस्यों और सम्मान पाने वाले कलाकारों का एक लाख रुपए तक मेडिक्लेम बीमा और एक लाख पचास हजार रुपए तक दुर्घटना बीमा किया जाता है।

हिंदी का प्रगामी प्रयोग

अकादेमी की राजभाषा नीति के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है। राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से हुईं ताकि हिंदी के प्रगामी प्रयोग की गति को बढ़ाने के वार्षिक कार्यक्रम की मदों के कार्यान्वयन में प्रगति को सुनिश्चित किया जा सके।

15 से 21 सितंबर, 2003 तक 'हिंदी सप्ताह' मनाया गया। स्टाफ सदस्यों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और विजेताओं को सचिव द्वारा नकद पुरस्कार और प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। वर्ष 2003-2004 के दौरान, 'हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहन योजना' के अधीन कर्मचारियों द्वारा हिंदी में किए गए कार्य के आधार पर नकद पुरस्कार दिया गया था। वित्तीय वर्ष के दौरान दो आशुलिपिकों को हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। न्यूज बुलेटिन, साइटेशन, वार्षिक रिपोर्ट, वाद्य दर्शन का अनुवाद भी हिन्दी अनुभाग द्वारा किया गया है।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान उपनिदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने 5 जून, 2003 को संगीत नाटक अकादेमी में राजभाषा में किए जाने वाले कार्य का निरीक्षण किया और संगीत नाटक अकादेमी में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के बारे में संतोषप्रद रिपोर्ट प्रस्तुत की। रिपोर्ट में दिए गए सुझावों पर अनुवर्ती कार्रवाई की जा रही है।

बजट तथा लेखा

अकादेमी को अपनी योजनागत और योजनेत्तर गतिविधियों पर होने वाले व्यय को पूरा करने के लिए भारत सरकार के संस्कृति विभाग से सहायता अनुदान प्राप्त होता है। अकादेमी का बजट योजनेत्तर 465 लाख और योजनागत 785 लाख रुपए के अतिरिक्त 121.21 लाख रुपए की प्रतिपूर्ति उत्तर-पूर्व के लिए की गई।

वार्षिक लेखाओं का समेकित विवरण, जिसमें प्राप्ति और अदायगी लेखा, आय और व्यय लेखा और संगीत नाटक अकादेमी एवं इसकी घटक इकाइयों जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी, इम्फाल; कथक केंद्र, नई दिल्ली और रवींद्र रंगशाला, नई दिल्ली के 2003-2004 के तुलन-पत्र सम्मिलित हैं, जो परिशिष्ट-IX मे दिए गए हैं।

स्मृति में

समीक्षाधीन अवधि (अप्रैल, 2003 से मार्च, 2004) के दौरान अकादेमी के गत वर्षों में सम्मानित रत्न सदस्यों और अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित कलाकारों तथा महापरिषद के सदस्यों, एवं प्रदर्शन कलाओं के अनेक कलाकारों का निधन हो गया। संगीत नाटक अकादेमी इन कलाकारों को श्रद्धासुमन अर्पित करती है।

रत्न सदस्य

बिसाना राम गोपाल, प्रतिष्ठित भरतनाट्यम नर्तक का 12 अक्तूबर, 2003 को देहावसान हो गया। आपको सन् 1990 में अकादेमी की रत्न सदस्यता से विभूषित किया गया था।

सेम्मनगुडी आर. श्रीनिवास अय्यर, कर्नाटक गायन संगीत के अत्यधिक विशिष्ट गायक का देहांत 31 अक्तूबर, 2003 को हो गया। आपको सन् 1976 में अकादेमी की रत्न सदस्यता से विभूषित किया गया था।

विलायत खां, सितार के सर्वश्रेष्ठ कलाकार का 13 मार्च, 2004 को देहांत हो गया। आपको सन् 1995 में अकादेमी की रत्न सदस्यता से विभूषित किया गया था।

कोमल कोठारी, संगीतज्ञ एवं लोकगाथा के मर्मज्ञ कोमल कोठारी का 20 अप्रैल, 2004 को देहांत हो गया। आपको सन् 1986 में अकादेमी की रत्न सदस्यता से विभूषित किया गया था।

केलूचरण महापात्र, प्रख्यात ओडिसी नर्तक एवं गुरु का 7 अप्रैल, 2004 को देहावसन हो गया। आपको सन् 1991 में अकादेमी की रत्न सदस्यता से विभूषित किया गया था।

अकादेमी के सम्मान से सम्मानित कलाकार

वी.जी. जोग, प्रख्यात वायलिन-वादक का 31 जनवरी, 2004 में देहांत हो गया। आपको सन् 1980 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

गंभीर सिंह मूरा, प्रख्यात पुरलिया छऊ नर्तक का 10 नवंबर 2002 को देहांत हो गया। आपको सन् 1982 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

प्रदीप चालिहा, प्रख्यात सत्रिय कलाकार का 24 अक्तूबर, 2003 को देहावसान हो गया। आपको सन् 1998 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

गोपाल कृष्ण, प्रख्यात विचित्र वीणा वादक का 5 मार्च 2004 को देहांत हो गया। आपको सन् 1994 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

जे. एन. कौशल, प्रख्यात रंगमंच कलाकार का 19 अप्रैल, 2004 को देहांत हो गया। आपको सन् 2002 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

शक्ति सेन, प्रख्यात बंगाली रंगमंच के अभिनेता का कोलकाता में देहांत हो गया। आपको 1999-2000 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

बलवंत गार्गी, प्रख्यात नाटककार का देहांत दिल्ली में हो गया। आपको सन् 1998 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

अब्दुल लतीफ खां, प्रतिष्ठित सारंगी वादक का निधन हो गया। आपको 1990 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

पंकज चरन दास, प्रतिष्ठित ओडिसी नर्तक का निधन हो गया। आपको 1970 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

बिसाना राम गोपाल

सेम्मनगुडी आर. श्रीनिवास अय्यर

विलायत खां

कोमल कोठारी

केलूचरण महापात्र
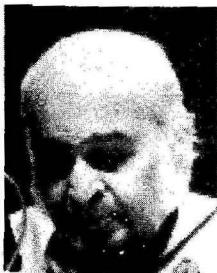
वी.जी. जोग
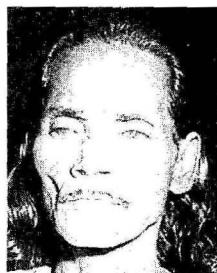
गंभीर सिंह मूरा

प्रदीप चालिहा

गोपाल कृष्ण
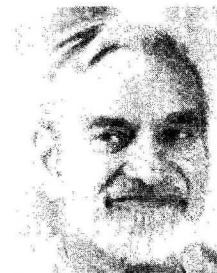
जे. एन. कोशल

केतकी दत्ता, प्रख्यात बंगाली रंगमंच अभिनेत्री का कोलकाता में देहांत हो गया। आपको 1999-2000 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

भीष्म साहनी, प्रख्यात हिंदी नाटककार एवं उपन्यासकार का दिल्ली में देहावसान हो गया। आपको सन् 2001 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

उप्पिनाकुदरु कोग्गा देवन्ना कामथ, पुतुल गुरु का देहांत हो गया। आपको सन् 1979 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

बी. वी. के. शास्त्री, संगीत एवं नृत्य पर लेख लिखने वाले प्रख्यात कलाकार का बंगलौर में देहांत हो गया। आपको 1999-2000 में प्रदर्शन कलाओं में समग्र योगदान के लिए संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

अनिल बिस्वास, फिल्मों के बिख्यात संगीतकार का देहावसान हो गया। आपको सन् 1986 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

के. पी. शिवानंदम्, प्रतिष्ठित वीणा वादक का देहांत हो गया। आपको सन् 1980 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

गिरीश चौधरी, प्रख्यात रंगमंच कलाकार का 18 मई, 2004 को गुवाहाटी में देहांत हो गया। आपको सन् 2001 में सगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

सुरेश अवस्थी, प्रख्यात विद्वान एवं प्रदर्शन कलाओं के लेखक का दिल्ली में देहांत हो गया। आपको प्रदर्शन कलाओं में समग्र योगदान के लिए सन् 2001 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

के. सी. परमेश्वरण पिल्लै "चंपाकुलम पाचू पिल्लै", प्रख्यात कथकली कलाकार का 10 मई, 2004 को देहांत हो गया। आपको सन् 1983 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

ए. कानन, प्रख्यात हिंदुस्तानी गायक का देहांत कोलकाता में हो गया। आपको सन् 1995 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।
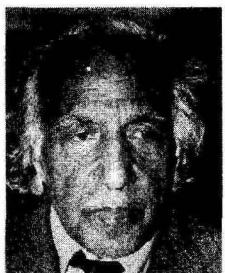
शक्ति सेन · बलवंत गार्गी · अब्दुल लतीफ खां · पंकज चरन दास · केतकी दत्ता
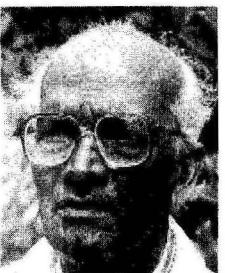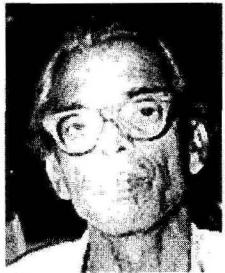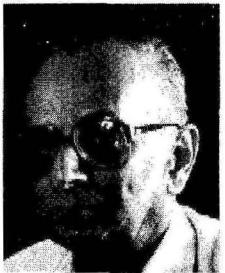
भीष्म साहनी · उप्पिनाकुदरु कोग्गा देवन्ना कामथ · बी. वी. के. शास्त्री · अनिल बिस्वास · के. पी. शिवानंदम्
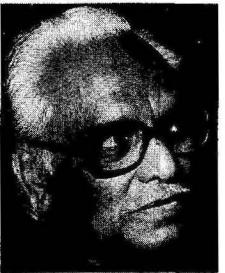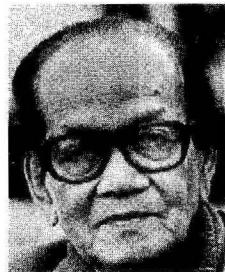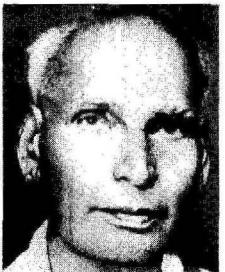
गिरीश चौधरी · सुरेश अवस्थी · के. सी. परमेश्वरण पिल्लै · ए. कानन
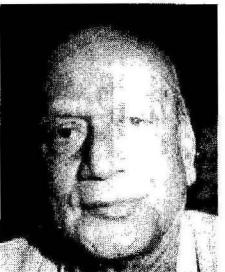
कथक केंद्र, नई दिल्ली

संगीत नाटक अकादेमी की एक घटक इकाई कथक केंद्र देश की एक अग्रणी नृत्य-शिक्षण संस्था है। वर्ष 1964 में स्थापित इस संस्था में कथक नृत्य और उससे संबद्ध विषयों, जैसे गायन और पखावज के बहुत-से पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। प्रारम्भिक पाठ्यक्रम इस प्रकार हैं : 7-16 आयु वर्ग के छात्रों के लिए नृत्य में (अंशकालिक) पाँच वर्षीय बुनियादी पाठ्यक्रम और 13-22 आयु वर्ग के छात्रों के लिए (अंशकालिक) तीन वर्षीय डिप्लोमा (पास)पाठ्यक्रम। नृत्य में उच्च पूर्णकालिक पाठयक्रम है : - 3 वर्षीय डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम (16-24 आयु वर्ग के लिए) और 2 वर्षीय पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम (19-26 आयु वर्ग के लिए)। हिंदुस्तानी गायन और पखावज वादन में तीन वर्षीय विशेष पाठ्यक्रम भी चलाए जाते हैं। नृत्य शिक्षकों और केंद्र के उन छात्रों के लिए, जिन्होंने डिप्लोमा (आनर्स) या पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरे कर लिए हैं और कथक शिक्षण कार्य करना चाहते हैं, एक वर्ष का पुनश्चर्या पाठ्यक्रम भी चलाया जाता है।

कथक केंद्र में एक प्रस्तुति एकक भी है, जिसका उद्देश्य प्रयोगात्मक कार्य के माध्यम से कथक में रंगपटल और तकनीक को समृद्ध करना है। केंद्र में जिन विभिन्न विधाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है, उनके लिए प्रतिष्ठित शिक्षकों की सेवाएँ उपलब्ध हैं। कथक केंद्र का प्रबंध संगीत नाटक अकादेमी के कार्यकारिणी मंडल में निहित है, जिसकी सहायता के लिए कथक केंद्र की सलाहकार समिति होती है। सलाहकार समिति का अध्यक्ष संगीत नाटक अकादेमी का उपाध्यक्ष होता है।

शैक्षिक एकक

इस वर्ष के दौरान केंद्र कथक नृत्य छात्रों के प्रशिक्षण के अपने मुख्य नियमित कार्य को निष्पादित करता रहा है। केंद्र के विद्यार्थियों का शैक्षिक सत्र 16 जुलाई से शुरू होता है तथा 15 मई को समाप्त होता है। किसी भी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों को जुलाई के प्रथम/द्वितीय सप्ताह में होने वाली प्रवेश परीक्षा में बैठना होता है। शैक्षिक सत्र 2003-2004 के लिए कथक गुरु श्री राजेंद्र गंगानी शैक्षिक समन्वय समिति के अध्यक्ष थे।

नए प्रवेश 2003-2004

सत्र 2003-2004 में केंद्र में प्रवेश के लिए विज्ञापन दिल्ली एवं दिल्ली के बाहर के विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए थे। केंद्र के गुरूओं/शिक्षकों की प्रवेश समिति ने पूर्व प्रवेश परीक्षा/साक्षात्कार के लिए आवेदकों के आवेदन पत्रों का चयन किया। विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा 3 जुलाई से 9 जुलाई, 2003 तक केंद्र में आयोजित की गई।

शैक्षिक सत्र 16 जुलाई, 2003 से शुरू हुआ और विभिन्न पाठ्यक्रमों में 102 नए प्रशिक्षणार्थियों को निम्नानुसार प्रवेश दिया गया :-

पाठ्यक्रम प्रवेश दिया गया	*छात्रों की संख्या*
3 वर्षीय बुनियादी पाठ्यक्रम	29
3 वर्षीय डिप्लोमा (पास) पाठ्यक्रम	13
3 वर्षीय डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम	25
2 वर्षीय पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम	10
3 वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम (केवल विदेशियों के लिए)	09
1 वर्षीय पखावज वादन पाठ्यक्रम	02
1 वर्षीय तबला वादन पाठ्यक्रम	02
प्रारंभिक पाठ्यक्रम	12
जोड़	**102**

छात्रों की संख्या (2003-04)

शैक्षिक सत्र 2003-2004 के शुरू में केंद्र ने 172 छात्रों (पुराने एवं नए) का नामांकन किया। प्रशिक्षण के विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्रों का ब्यौरा निम्न प्रकार है :

पाठ्यक्रम	*छात्रों की संख्या*
3 वर्षीय बुनियादी पाठ्यक्रम	51
3 वर्षीय डिप्लोमा (पास) पाठ्यक्रम	21
3 वर्षीय डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम	61
2 वर्षीय पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम	15
प्रारंभिक पाठ्यक्रम	11
तीन वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम (केवल विदेशियों के लिए)	
1 वर्षीय (पखावज) प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम	01
1 वर्षीय (तबला) प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम	02
जोड़	**172**

विदेशी छात्र

केंद्र भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के जरिए या अन्य संस्था के जरिए भारत से बाहर के छात्रों को प्रवेश देता रहा है। सत्र 2003-2004 में (पुराने एवं नए) नामांकित विदेशी छात्र निम्न प्रकार हैं :

	पुराने	*नए*
दक्षिण कोरिया	02	-
उजबेकिस्तान	03	-
कजाकिस्तान	03	01
फ्रांस	01	-
इंडोनेशिया	01	-
रूस	01	02
श्रीलंका	-	01
गुयाना	-	01
जोड़	**11**	**05**

छात्रवृत्तियाँ

केंद्र में मेधावी छात्रों को 20 छात्रवृत्तियाँ प्रदान कीं। अकादमिक सत्र 2003-2004 के दौरान डिप्लोमा (आनर्स) एवं पोस्ट डिप्लोमा के छात्रों को निम्नानुसार छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गई थीं :

प्रत्येक 1000 रुपए मासिक की 17 छात्रवृत्तियाँ डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम के मेधावी छात्रों को प्रदान की गईं :

पाठ्यक्रम	*छात्रवृत्तियों की संख्या*
डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष	05
डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष	05
डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम तृतीय वर्ष	07

प्रत्येक एक हजार पाँच सौ रुपये **मासिक** की 2 छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं :

पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष	01
पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष	02

निःशुल्कता (2003-2004)

विभिन्न पाठ्यक्रमों के 14 विद्यार्थियों को निःशुल्कता प्रदान की गई।

मकान किराया सब्सिडी

9 सितंबर, 2003 को हुई सलाहकार समिति की बैठक की अनुशंसा के अनुसार शैक्षिक सत्र 2003-04 में 10 योग्य छात्रों को 16 जुलाई 2003 से 15 मई 2004 तक 1500/- प्रति माह की मकान किराया सब्सिडी दी गईं।

व्याख्यान शृंखला

केंद्र, अपने विद्यार्थियो के लाभ के लिए नृत्य/साहित्य क्षेत्र के विद्वानों को केंद्र के पाठ्यविवरण के अनुसार विभिन्न सैद्धांतिक विषयों पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित करता है। इस व्याख्यान शृंख्ला का प्रारंभ नवंबर, 2003 से हुआ। सैद्धांतिक पाठ्यविवरण के विभिन्न विषयों पर श्री मुन्ना शुक्ला, सहचारी प्राध्यापक ने व्याख्यान शृंखला शुरू की और बाद में सुश्री कविता ठाकुर ने व्याख्यान दिए।

विशेष कक्षाएँ

3 सितंबर, 2003 को श्री रोनी घोष, कोलकाता ने नृत्य और काया ओज (बॉडी टोनिंग) विषय पर विशेष कक्षा का आयोजन किया। उन्होंने 12 से 17 जनवारी, 2004 तक केंद्र के छात्रों के लाभ के लिए इस विषय पर एक कार्यशाला का भी आयोजन किया।

अर्द्ध वार्षिक परीक्षाएँ 2003-2004

शैक्षिक सत्र 2003-2004 के लिए अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं का आयोजन 18 से 29 दिसंबर, 2003 तक किया गया था। नृत्य और संबद्ध विषय पाठ्यक्रमों के लिए केंद्र के गुरुओं ने परीक्षाओं का संचालन किया। कुल 157 छात्रों में से 8 छात्र अनुपस्थित रहे और शेष 149 छात्र इन परीक्षाओं में बैठे।

लघु दीक्षांत समारोह 2003

इस वर्ष निदेशक, राष्ट्रीय नाट्य स्कूल श्री देवराज अंकुर ने 14 नवंबर, 2003 को कथक केंद्र हॉल में आयोजित समारोह में वर्ष 2002-2003 में केंद्र से अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले छात्रों को (24 छात्र डिप्लोमा पास के और 11 छात्र बुनियादी पाठ्यक्रम के) डिप्लोमा और प्रमाण-पत्र प्रदान किए। तत्पश्चात् बुनियादी और डिप्लोमा (पास) पाठ्यक्रमों के छात्रों ने सामूहिक नृत्य प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम अनुभाग

कथक केन्द्र की एक नटाली (रेपर्टरी)कंपनी है जो कथक नृत्य के क्षेत्र में अभिनव एवं प्रयोगात्मक कार्यों को अनवरत रूप से करती आ रही है। रेपर्टरी का विंग, शास्त्रीय कथक

शैली का प्रदर्शन देश एवं विदेश में बड़ी संख्या में दर्शकों के सामने प्रस्तुत करता है।
वर्ष 2003-2004 में निम्नलिखित महोत्सवों का आयोजन किया गया।

कथक केंद्र उत्सव

1 और 2 सितंबर, 2003 को 'कथक केंद्र उत्सव' का आयोजन किया गया था जिसमें केंद्र के गुरुओं और उनके शिष्यों ने नृत्य रचनाएँ प्रस्तुत कीं। इस उत्सव में केंद्र के पूर्व छात्रों ने भी भाग लिया।
इस अवसर पर प्रस्तुत कार्यक्रम निम्न प्रकार था :

1 सितंबर
एकल : नम्रता पमनानी; युगल : श्रुति शुक्ला और शैफाली पवार; 'वर्षा ऋतु', नृत्यरचनाकार : मानसी डबराल; 'मल्हार', नृत्यरचनाकार : उर्मिला नागर; 'जीवन', नृत्यरचनाकार : कृष्ण मोहन मिश्रा; 'आस', डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम के उत्तीर्ण होने वाले छात्र।

2 सितंबर
एकल : शलिनी शर्मा; युगल : जया प्रियदर्शिनी और बिल्टू सरकार; 'अर्द्धनारीश्वर', नृत्यरचनाकार : जय किशन महाराज; 'ताल तराना', नृत्यरचनाकार : गीतांजलि लाल; 'नर्तन से कीर्तन', नृत्यरचनाकार : राजेंद्र कुमार गंगानी; 'परंभी', नृत्यरचनाकर : मालती श्याम।

कथक उत्सव (28 से 31 अक्तूबर, 2003)

प्रत्येक वर्ष अक्तूबर-नवंबर में आयोजित किए जाने वाले-कथक उत्सव में कथक नृत्य की उभरती प्रतिभाओं द्वारा नृत्य प्रस्तुत किए जाते हैं ताकि कथक शिक्षकों, वरिष्ठ कलाकारों और युवा नर्तकों के कार्यों और योगदान को प्रदर्शित किया जा सके।

इस वर्ष कथक केंद्र ने यह उत्सव 28 से 31 अक्तूबर, 2003 तक कमानी सभागार, नई दिल्ली में स्व. गुरु मोहन राव कल्याणपुरकर की स्मृति में आयोजित किया।

कार्यक्रम निम्न प्रकार है :

28 अक्तूबर
पखावज वादन : श्री डालचंद शर्मा (दिल्ली); कथक एकल : सुश्री असावरी राहलकर (पुणे), सुश्री पूजा श्रीवास्तव मणि (दिल्ली), श्री असीमबंधु भट्टाचार्जी (कोलकाता)

29 अक्तूबर
सारंगी वादन : मोहम्मद जफर (दिल्ली); कथक एकल : सुश्री ऋतुश्री चौधरी (कोलकाता), सुश्री प्राची शाह (मुंबई), श्री चित्रेश दास (यूएसए)

30 अक्तूबर
तबला वादन : श्री रशीद मुस्तफा थिरकवा (दिल्ली); कथक एकल : श्री राधव साह (बिहार), सुश्री कविता ठाकुर (शिमला), श्री माता प्रसाद मिश्रा (वाराणसी)

31 अक्तूबर
गायन : सुश्री स्वर्णिमा (दिल्ली); कथक एकल : डेनियल फ्रैंडी, स्वप्निल करमाहे (रायपुर), विरेश्वर गौतम (मुंबई), जयश्री मोघे (पुणे)

कथक के महत्वपूर्ण पक्षों पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 29 से 31 अक्तूबर, 2003 तक कथक हाल, कथक केंद्र, बहावलपुर हाउस, भगवान दास रोड, नई दिल्ली में प्रातः कालीन सत्र में किया गया था। प्रतिष्ठित आमंत्रित विद्वानों और केंद्र के गुरुओं ने संगोष्ठी में भाग लिया जिसका विवरण निम्न प्रकार है :

29 अक्तूबर
विषय : मोहन राव कल्याणपुरकर - व्यक्तित्व के अविस्मरणीय आयाम
अध्यक्ष : शांता सर्बजित सिंह
वक्ता : रोहिणी भाटे, मुन्ना शुक्ला, पूर्णिमा पांडे, पद्मा शर्मा
निदर्शन : सुभाष कुमार

30 अक्तूबर
विषय : रोहिणी भाटे की आत्मकथात्मक - अंतरंग वार्ता
संवाद सखी : गीतांजलि लाल

31 अक्तूबर
विषय : एकल कथक के समक्ष चुनौतियों की पहचान
अध्यक्ष : जयंत कस्तुआर
वक्ता : एस. के. सक्सेना, उर्मिला नागर, शोवना नारायण, अदिती मंगलदास, प्रेरणा श्रीमाली, विजय शंकर मिश्रा
केंद्र के तबला प्रशिक्षक गोविंद चक्रवर्ती इस उत्सव के समन्वयक थे।

कथक महोत्सव, 2004

कथक केंद्र ने अपने वार्षिक कथक महोत्सव, 2004 का आयोजन कमानी सभागार में 1 से 4 फरवरी, 2004 तक किया। यह महोत्सव गुरु सुंदर प्रसाद जी को समर्पित था। इस महोत्सव का उद्घाटन श्रीमती सोनल मानसिंह, अध्यक्ष, संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली ने किया। 2 से 5 फरवरी, 2004 तक कथक केंद्र हाल, नई दिल्ली में प्रातः काल में अन्योन्यक्रिया सत्रों/संगोष्ठियों का आयोजन किया गया था।

कार्यक्रम

1 फरवरी

सुश्री मधुरिता सारंग : एकल; सुश्री इलिओनोरा पेटरोवा एवं श्री हरीश गंगानी : युगल; श्री मुन्ना शुक्ला : नृत्यरचनाकार; सुश्री प्रेरणा श्रीमाली : एकल

2 फरवरी

सुश्री गीतांजलि लाल : नृत्यरचना; सुश्री पार्वती दत्ता और सुश्री शिखा खरे : युगल; सुश्री कपिला राज : एकल; पदातिक नृत्य सेंटर : नृत्यरचना सुश्री मलानिका मित्रा : एकल

3 फरवरी

श्री सुरेंद्र साइकिया : एकल; सुश्री अंजनि अम्बेदाओकर एवं सुश्री आम्रपाली : युगल; श्री जय किशन महाराज : नृत्यरचना; श्री जयंत कस्तुआर : एकल

4 फरवरी

ध्वनि : नृत्यरचना; जयपुर कथक केंद्र : नृत्यरचना; सुश्री मनीषा साठे : एकल; श्री राजेंद्र गंगानी : नृत्यरचना; सुश्री मंजुश्री चटर्जी : एकल

संगोष्ठी

2 फरवरी

विषय : "कथक गुरु और विद्वान के रूप में - ऐसे थे गुरु सुंदर प्रसाद जी"

अध्यक्ष : सुश्री कनक रेले

भाग लेने वाले : सुश्री माया राव नटराजन, सुश्री शांता सर्बजित सिंह, सुश्री लीला वेंकटरमन, सुश्री मंजुश्री चटर्जी, श्री मुन्ना शुक्ला, श्री रवींद्र मिश्रा, सुश्री मंजरी सिन्हा, सुश्री मधुरिता सारंगा, सुश्री उर्मिला नागर, श्री तीर्थ राम आजाद

3 फरवरी

विषय : "कथक : अनेक रंग"

अध्यक्ष : सुश्री माया राव नटराजन

भाग लेने वाले : सुश्री सविता गोडबोले (इंदौर), सुश्री विभा दधीच (इंदौर), सुश्री शशि शंखला (जयपुर), सुश्री मलाविका मित्रा (कोलकाता), श्री एम. के. गिरि (आगरा)

4 फरवरी

विषय : "कथक : अनेक रंग"

अध्यक्ष : श्री जयंत कस्तुआर

भाग लेने वाले : श्री पुरू दधीच (खेरागढ़), सुश्री कपिला राज (लखनऊ), श्री पुरुषोत्तम नायक (ग्वालियर), श्री बाल किशन (मेरठ)

5 फरवरी, 2004

विषय : सुश्री माया राव नटराजन से "अंतरंग वार्ता"

अध्यक्ष : डॉ. सुनील कोठारी

संवाद-सखी : श्रीमती चेतना जालान

अप्रैल से नवंबर, 2003 तक प्रदर्शन और अन्य गतिविधियाँ

8 अप्रैल, 2003

श्रीलंका की राष्ट्रपति महामहिम चंद्रिका भंडारनायका कुमारातुंगा की भारत यात्रा के अवसर पर कथक केंद्र ने उनके सम्मान में अकादेमी के मेघदूत थिएटर, नई दिल्ली में श्री राजेंद्र कुमार गंगानी (शिव स्तुति), श्रीमती गीतांजलि लाल (तराना), श्रीमती मालती श्याम (दादरा)/एकल नृत्य श्री राजेंद्र कुमार गंगानी द्वारा नृत्य रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

16 नवंबर, 2003

भारतीय रुधिर आधान और प्रतिरक्षीरुधिर विज्ञान सोसायटी तथा भारतीय रुधिर विज्ञान और रुधिर आधान चिकित्सा शास्त्र सोसायटी द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय रुधिर आधान सोसायटी के 12वें एशिया पेसिफिक सम्मेलन के दौरान केंद्र ने 16 नवंबर, 2003 को आर एंड आर ऑडिटोरियम, दिल्ली कैंट में श्री जय किशन महाराज की नृत्यरचना और श्रीमती मालती श्याम की एकल नृत्यरचना प्रस्तुत की।

जवाहरलाल नेहरू मणिपुर डांस अकादेमी, इम्फाल

संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली की एक घटक इकाई जवाहर लाल नेहरू मणिपुर डांस एकेडमी मणिपुरी नृत्य और संगीत के शिक्षण के साथ थांग-टा जैसे संबद्ध विषयों के प्रशिक्षण की प्रमुख संस्था है। सन् 1954 में स्थापित इस संस्था में उपर्युक्त विषयों में विस्तृत पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं। इस संस्था के स्टाफ में प्रतिष्ठित शिक्षक हैं और इसमें नृत्य-नाटक की बड़ी रेपर्टरी वाली प्रस्तुत इकाई है। एकेडमी का प्रबंध संगीत नाटक अकादेमी के कार्यकारिणी मंडल के हाथ में है, जिसकी सहायता के लिए एक स्थानीय सलाहकार समिति (जिसकी अध्यक्षता मणिपुर के राज्यपाल करते हैं) है, जो अकादेमी के स्तरों के अनुरक्षण और इसके कार्यक्रमों और योजनाओं के निर्माण के लिए उत्तरदायी है। 2003-04 के दौरान आयोजित कार्यक्रमों का संक्षेप में विवरण निम्न प्रकार है :

स्थापना दिवस

जे. एन. एम. डी. ए. का 49वाँ स्थापना दिवस 1 अप्रैल, 2003 को अकादेमी के सभागार में मनाया गया था। मणिपुर के राज्यपाल श्री वेद मरवाह मुख्य अतिथि थे और जे. एन. एम. डी. ए. के उपाध्यक्ष प्रो. एल. दामोदर सिंह ने समारोह की अध्यक्षता की। 2003 के तीन स्वर्ण पदक पाने वालों ने एकल कला प्रदर्शन कार्यक्रम और अकादेमी के छात्रों ने नृत्य और संगीत के विभिन्न कार्यक्रम यथा, लाई-हराओबा, माओ नृत्य, ढोल चोलम, काबुली नृत्य, थांग-टा, नट संकीर्तन और वसंत रास प्रस्तुत किए। समारोह में पर्याप्त संख्या में दर्शक उपस्थित थे और मीडिया ने व्यापक रूप से इसका प्रचार किया।

लाई-हराओबा महोत्सव

लार्ड इबूधोऊ चखावा का एक दिन का लाई-हराओबा महोत्सव 13 मई, 2003 को अकादेमी के कॉम्प्लेक्स में आयोजित किया गया था। उत्सव में अकादेमी के समस्त छात्रों/गुरुओं और कलाकारों ने भाग लिया। उत्सव अकादेमी की गतिविधियों का नियमित भाग है।

वैनू परेंग (नृत्य-नाटिका)

अकादेमी की प्रस्तुति इकाई के कलाकारों ने उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम श्री एम.एम. राजेंद्रन के सम्मान में 3 मई, 2003 को नृत्य-नाटिका "वैनू परेंग" प्रस्तुत की। इस अवसर पर मणिपुर के राज्यपाल महामहिम श्री वेद मरवाह, मणिपुर के माननीय कला और संस्कृति मंत्री डॉ. एम. नरसिंह, कलाकार, कलाप्रेमी आदि उपस्थित थे। नृत्य-नाटिका का व्यापक रूप से स्वागत किया गया।

लाई-हराओबा पर कार्यशाला

लाई-हराओबा की विशेषज्ञ श्रीमती इबेटोम्बी देवी ने प्रस्तुति इकाई के साथ लाई-हराओबा पर एक माह की कार्यशाला का संचालन किया। मई, 5 से जून, 5, 2003 तक चलने वाली यह कार्यशाला प्रस्तुति इकाई के कलाकारों के साथ विशेषज्ञों द्वारा संचालित की जाने वाली कार्यशालाओं की शृंखला का एक भाग थी।

यह भी उल्लेखनीय है कि भरतनाट्यम की विशेषज्ञ और प्रतिष्ठित नर्तकी श्रीमती चित्रा विश्वेश्वरण ने भी मार्च, 2003 माह में एक कार्यशाला का आयोजन किया था।

राधा सती (नृत्य-नाटिका)

यह नृत्य-नाटिका मणिपुर के राज्यपाल और अकादेमी के अध्यक्ष महामहिम श्री अरविंद दवे के सम्मान में 11 जुलाई को अकादेमी के सभागार में प्रस्तुत की गई थी।

कृष्ण-लीला

श्री एल. उपेंद्रो शर्मा, कार्यक्रम अधिकारी के नेतृत्व में अकादेमी के एक 13-सदस्यीय दल ने 24-28 अगस्त, 2003 को कमानी ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा आयोजित कृष्ण-लीला उत्सव में भाग लिया।

अकादेमी ने 26 अगस्त को 'महारास' प्रस्तुत किया। प्रदर्शन में उपस्थित व्यक्तियों में अन्यों के अतिरिक्त डॉ. नजमा हेपतुल्लाह, अध्यक्ष और श्री प्रेम कुमार, आईसीसीआर के महानिदेशक भी शामिल थे। दौरे की अवधि 20 से 30 अगस्त, 2003 तक थी।

बंगलौर में कार्यक्रम

प्रस्तुति इकाई के श्री डब्ल्यू. लोकेंद्रजीत सिंह के नेतृत्व में अकादेमी के एक 12-सदस्यीय दल ने 2 अक्तूबर, 2003 को चौदिश मेमोरियल हाल, बंगलौर में मणिपुरी नृत्य और संगीत का प्रदर्शन जन साधारण के लिए किया।

दल ने एक और प्रदर्शन प्रातः काल 3 अक्तूबर, 2003 को केंद्रीय कारागार, बंगलौर में प्रस्तुत किया। दल ने 1 अक्तूबर को श्रीमती मायाराव के नाट्य इंस्टीट्यूट ऑफ कथक एंड कॉरियोग्राफी में एक कार्यशाला का भी आयोजन किया। प्रदर्शनों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। इस कार्यक्रम को संगीत नाटक अकादेमी ने प्रायोजित किया था।

अनन्य नृत्य उत्सव

श्री एल. उपेंद्रो शर्मा, कार्यक्रम अधिकारी के नेतृत्व में अकादेमी के एक 22-सदस्यीय दल ने 6-12 अक्तूबर, 2003 को सहर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित अनन्य नृत्य उत्सव में भाग लिया।

दल ने 11 अक्तूबर, 2003 को पुराना किला, नई दिल्ली में 'मेघदूत' (नृत्य-नाटिका) प्रस्तुत की। प्रदर्शन की अत्यधिक प्रशंसा की गई।

अफ्रेशियाई खेल, हैदराबाद में कार्यक्रम

श्री एस. थानिल सिंह, प्रधान गुरु के नेतृत्व में अकादेमी के एक 12-सदस्यीय दल ने अफ्रेशियाई खेल, हैदराबाद के संबंध में 27 अक्तूबर से 1 नवंबर, 2003 तक पुंग और ढोल चोलम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली ने प्रायोजित किया था।

इटली और जर्मनी की यात्रा

श्री एल. उपेंद्रो शर्मा, कार्यक्रम अधिकारी के नेतृत्व में एक 8- सदस्यीय दल ने इटली और जर्मनी में पुंग-चोलम, यौद्धिक कला और ढोल-चोलम प्रस्तुत किया।

दल ने दो प्रदर्शन इटली में, आठ प्रदर्शन जर्मनी में प्रस्तुत किए जिसमें भारतीय दूतावास, बर्लिन और इंटरनेशनल बर्लिन क्लब प्रत्येक में एक-एक कार्यक्रम शामिल है। कार्यक्रम भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई द्वारा प्रयोजित किया गया था।

कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। दौरे की अवधि 26 अक्तूबर, 2003 से 19 नवंबर, 2003 तक थी।

स्मारक डाक टिकट का जारी करना

संगीत नाटक अकादेमी के 50 वर्ष पूरे होने के समारोह के एक भाग के रूप में स्मारक डाक टिकट जारी करने के अवसर पर 2 दिसंबर, 2003 को सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में अकादेमी के पाँच कलाकारों ने मोईबुंग के साथ पुंग-चोलम और ढोल-चोलम प्रस्तुत किया। समारोह में माननीय पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी उपस्थित थे।

नौंगडोल लाइमा (नृत्य-नाटिका)

प्रस्तुति एकक के कलाकारों ने स्व. गुरु थियम तरुण कुमार सिंह द्वारा नृत्यरचित और निर्देशित "नौंगडोल लाइमा" नृत्य नाटिका को 11 फरवरी, 2004 को प्रस्तुत किया जिसे एकक के कलाकारों ने हाल ही में पुनः प्रदर्शित किया है। मुख्य अतिथि के रूप में मणिपुर के राज्यपाल और अकादेमी के अध्यक्ष श्री अरविंद दवे ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

स्वर्ण नृत्य प्रतिभा (ए फेस्टिवल ऑफ डांस)

अकादेमी के एक 18 कलाकारों के दल ने स्वर्ण नृत्य प्रतिभा नृत्योत्सव में पुंग-चोलम, ढोल-चोलम और वसंत रास प्रस्तुत किया। इसका आयोजन संगीत नाटक अकादेमी ने सूचना और सांस्कृतिक कार्य विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के सहयोग से रवींद्र सदन, कोलकाता में क्रमशः 24 और 25 मार्च को किया था। उत्सव 21 से 25 मार्च, 2004 तक आयोजित किया गया था।

वार्षिक परीक्षा

सत्र की वार्षिक परीक्षाएँ अकादेमी में 9 से 20 फरवरी, 2004 तक आयोजित की गई थीं। सभी पाठ्यक्रमों की परीक्षाओं के संचालन के लिए अकादेमी के विद्यमान गुरुओं के अतिरिक्त 25 बाह्य परीक्षकों की सेवाएँ ली गई थीं। विभिन्न पाठ्यक्रमों में सफल होने वाले छात्रों की संख्या निम्न प्रकार है :

पाठ्यक्रम	*परीक्षा में बैठे*	*सफल*	*असफल*
बुनियादी पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष (नृत्य और संकीर्तन)	37	29	8
बुनियादी पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष (नृत्य और संकीर्तन)	34	24	10
बुनियादी पाठ्यक्रम	29	23	00
डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष (नृत्य और संकीर्तन)	90	74	16
डिप्लोमा पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष (नृत्य और संकीर्तन)	49	43	06
डिप्लोमा पाठ्यक्रम तृतीय वर्ष (नृत्य और संकीर्तन)	38	37	01
पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष से तृतीय वर्ष (नृत्य और संकीर्तन)	85	84	01
जोड़	362	314	48

संगीत नाटक अकादेमी
सम्मान 2003
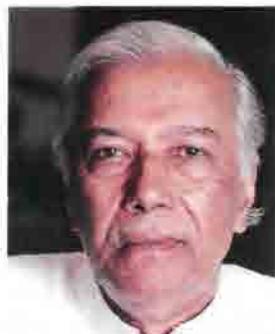
गुलाम मुस्तफा वारिस खान
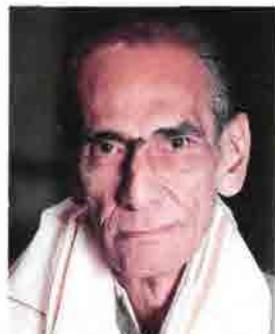
यशवंत बालकृष्ण जोशी

अरविंद नटवरलाल पारिख

भवानी शंकर कथक

त्रिच्चूर वैद्यनाथ रामचंद्रन

एम. ए. नरसिम्हाचार

ए. कन्याकुमारी

कादरी गोपाल नाथ

सी. के. बालगोपालन

सुनयना हज़ारी लाल

उर्मिला नागर

सदनम पी. वी. बालकृष्णन

सुर्यमूखी देवी

कलावती देवी

के. उमा रामाराव

हरे कृष्ण बेहेरा

अरूण शर्मा

रत्नाकर रामकृष्ण मतकरी

देवेंद्र राज अंकुर

नीलम मानसिंह चौधरी

शाँओली मित्र

सि.आर. सिम्हा
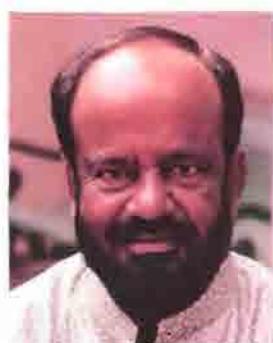
श्रीनिवास जी. कप्पंणा
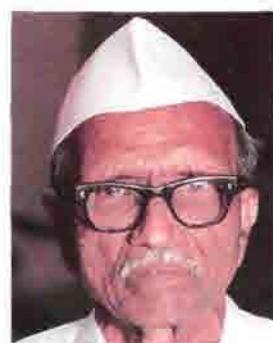
अनंत गोपाल शिन्दे

लाइश्रम बीरेंद्रकुमार सिंह
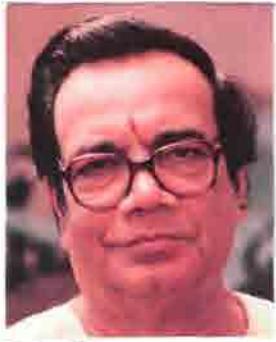
प्रभात शर्मा

लीला ओम चेरी

चुक्का सत्तेय्य

भालचंद्र व्यंकटेश पेंढारकर

बनमाली महारणा

पूरण भाट

कोषकांत देवगोस्वामी

श्री पी. बी. सुब्रहमण्यम (सुबुड्डु)
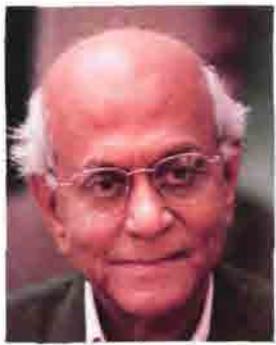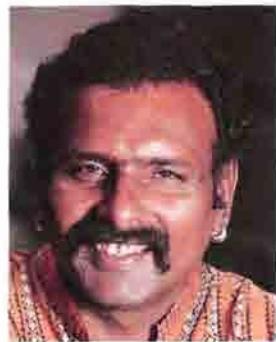
उजबेकिस्तान में भारतीय वाद्यों की प्रदर्शनी

प्रदर्शनी में भारतीय वाद्य (ऊपर) प्रदर्शनी में आगन्तुक (नीचे)

बड़े गुलाम अली खाँ शताब्दी के अवसर पर मज़हर खान, जावेद खान और रज़ा खान द्वारा प्रस्तुति
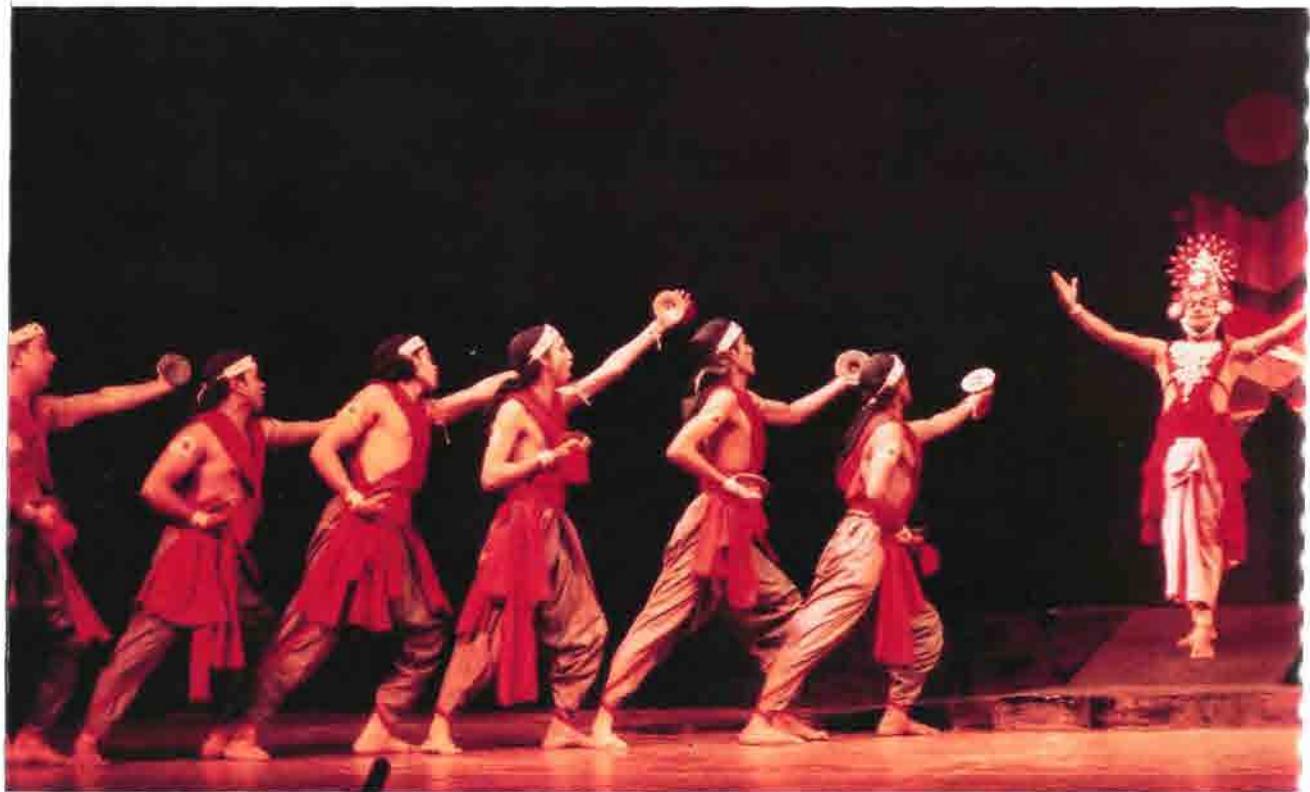
(*ऊपर*) दिल्ली में रंग स्वर्ण के उद्घाटन पर (*बाएं से दाएं*) के. एन. पणिक्कर, गिरीश कारनाड, भूपेन हजारिका, हबीब तनवीर, विजय तेंडुलकर और श्यामानंद जालान - अकादेमी के उपाध्यक्ष
(*नीचे*) के. एन. पणिक्कर द्वारा निर्देशित कर्णभारम्
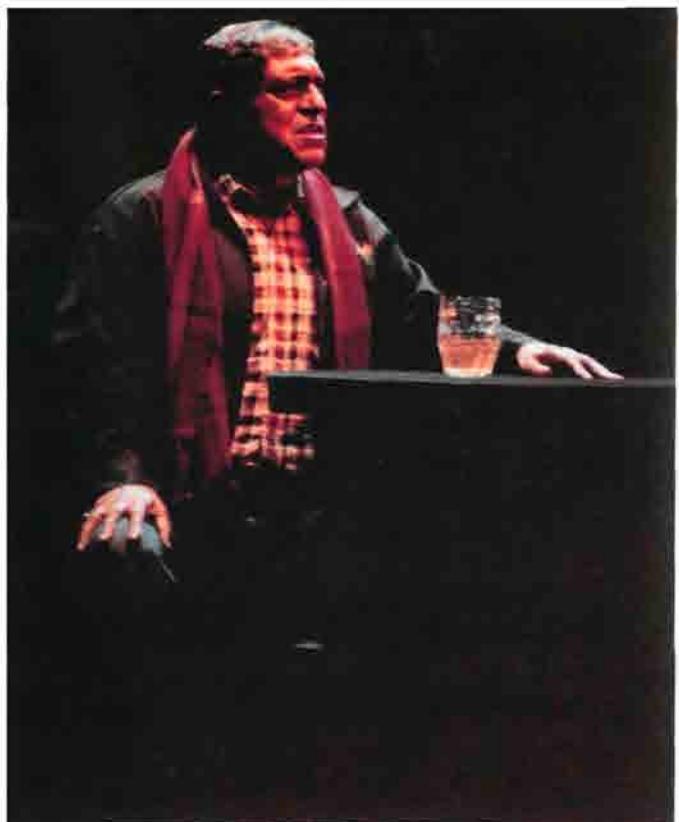
डेढ़ इंच ऊपर में अमरीश पुरी

डियर लायर में रत्ना पाठक शाह और नसीरुद्दीन शाह
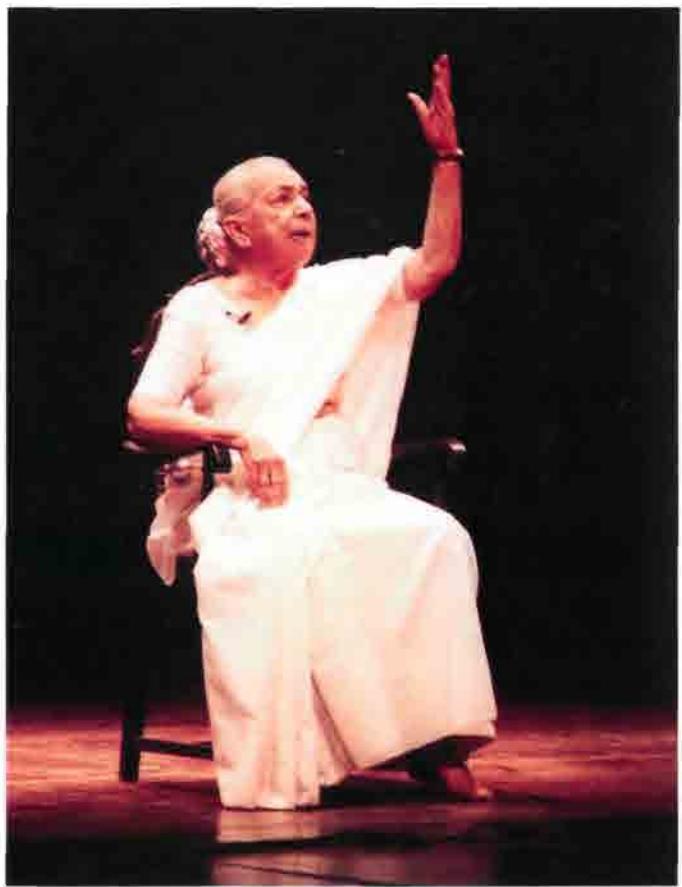
ज़ोहरा सैगल
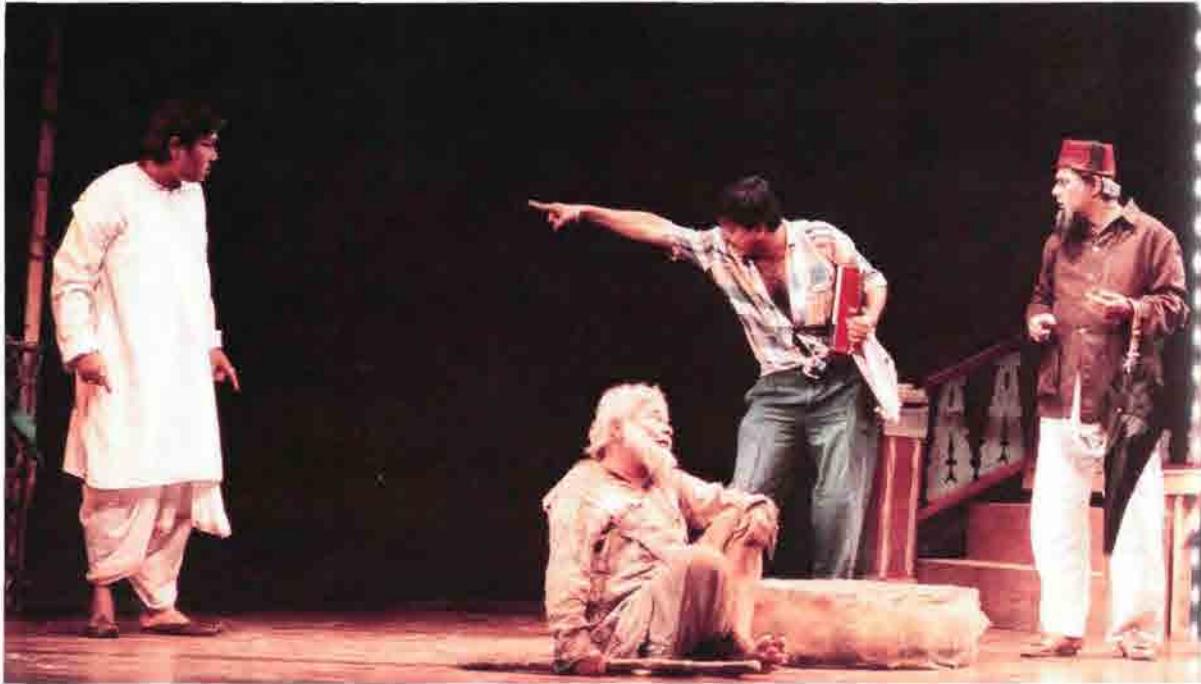
सजनी बागान में मनोज मित्रा (*बैठे हुए*)
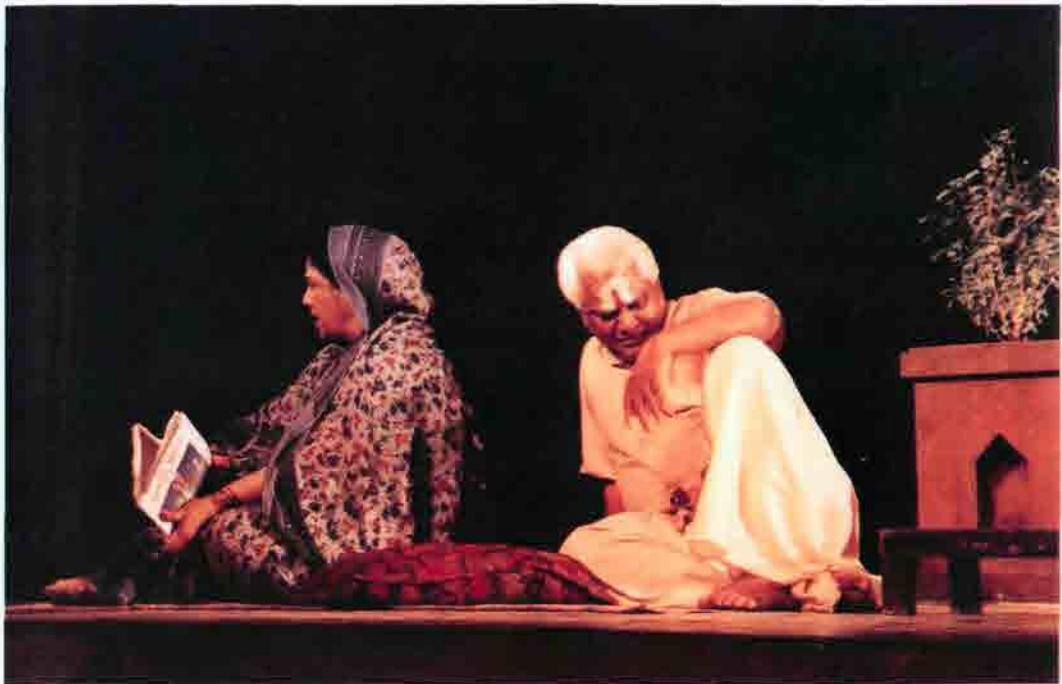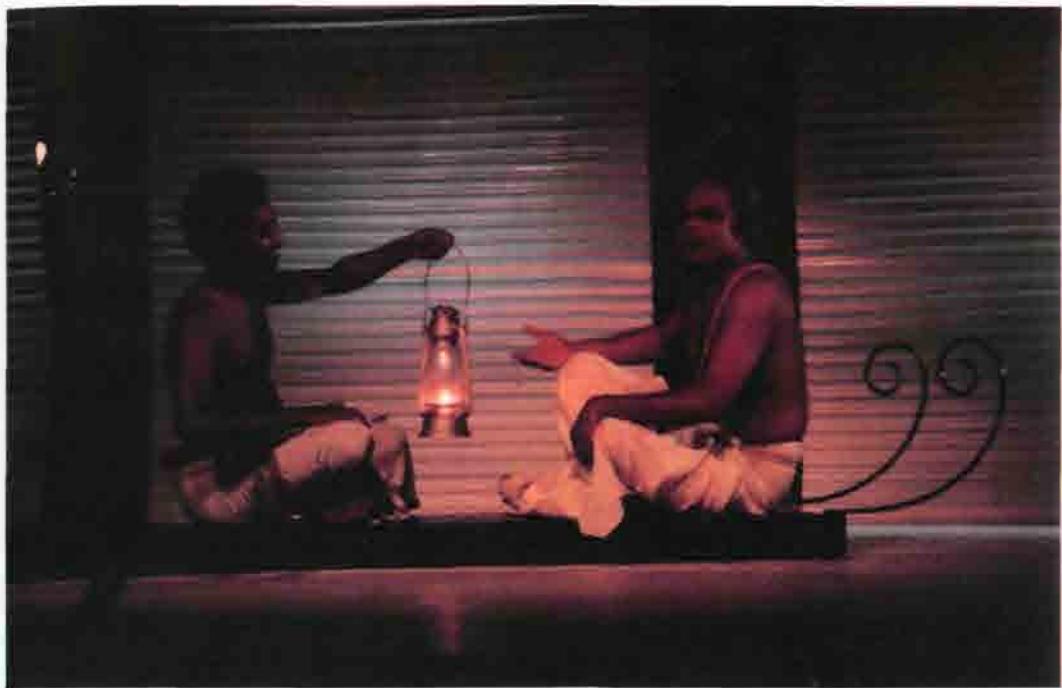
ऊपर : ज्योतिष एम. जी. द्वारा निर्देशित *सिद्धार्थ*
नीचे : *काशीराम* में उषा गांगुली
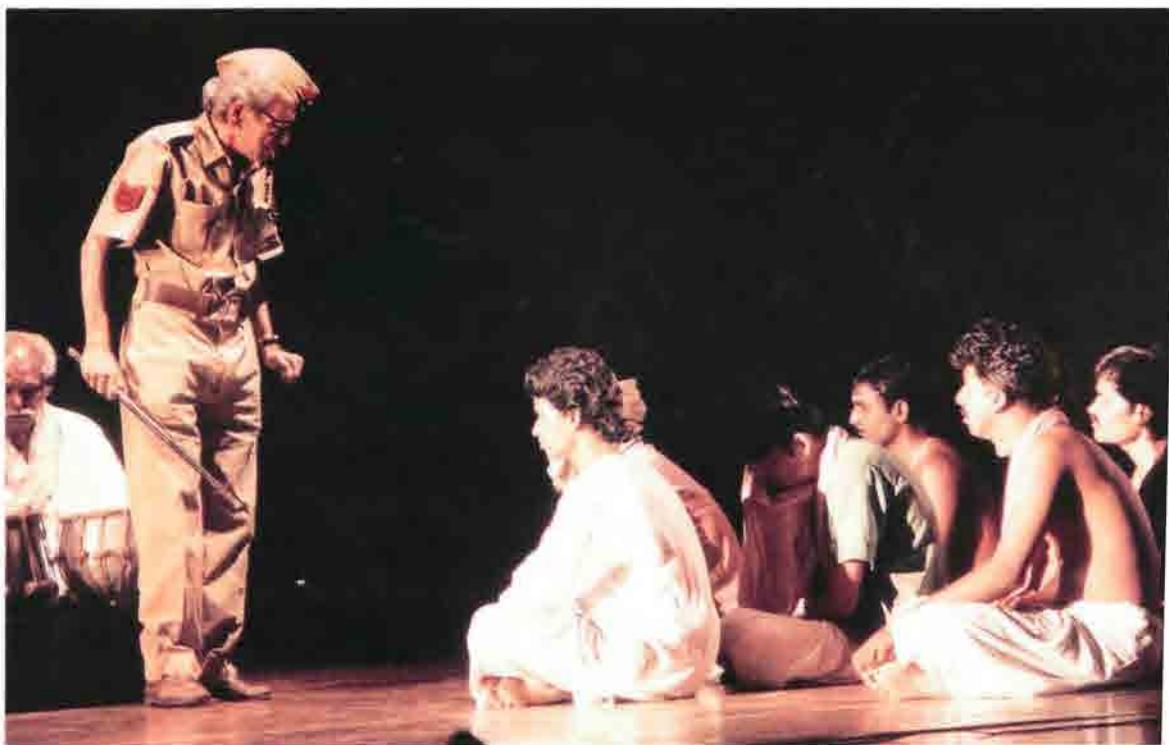
ऊपर : *चरण दास चोर* में हबीब तनवीर *(खड़ी मुद्रा में)*
नीचे : विजय केंकरे द्वारा निर्देशित *मित्रा* में श्रीराम लागू

ऊपर : यक्षगानः श्री इदागुंजी महागणपति यक्षगान मंडलम केरेमने, हूनावर
नीचे : कूटियाट्टम, मार्गी तिरुवनन्तपुरम

ऊपर : गौतम हल्दार द्वारा निर्देशित *बडियार घाट*
नीचे : *नटुआ नाच*: बटोही बिहार लोकविद्या संस्थान, सहरस
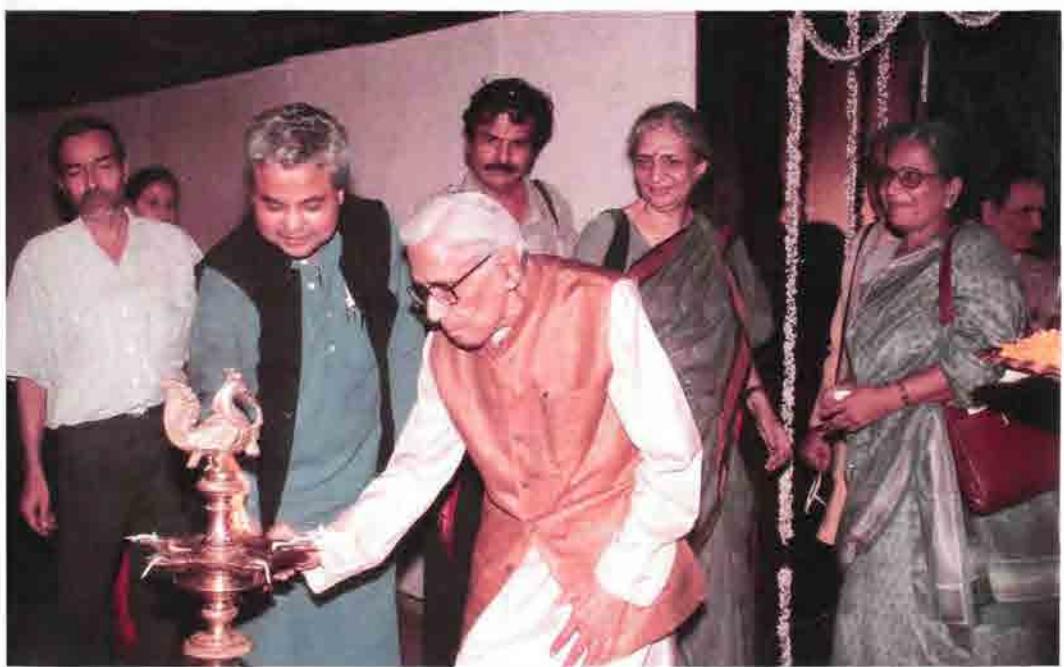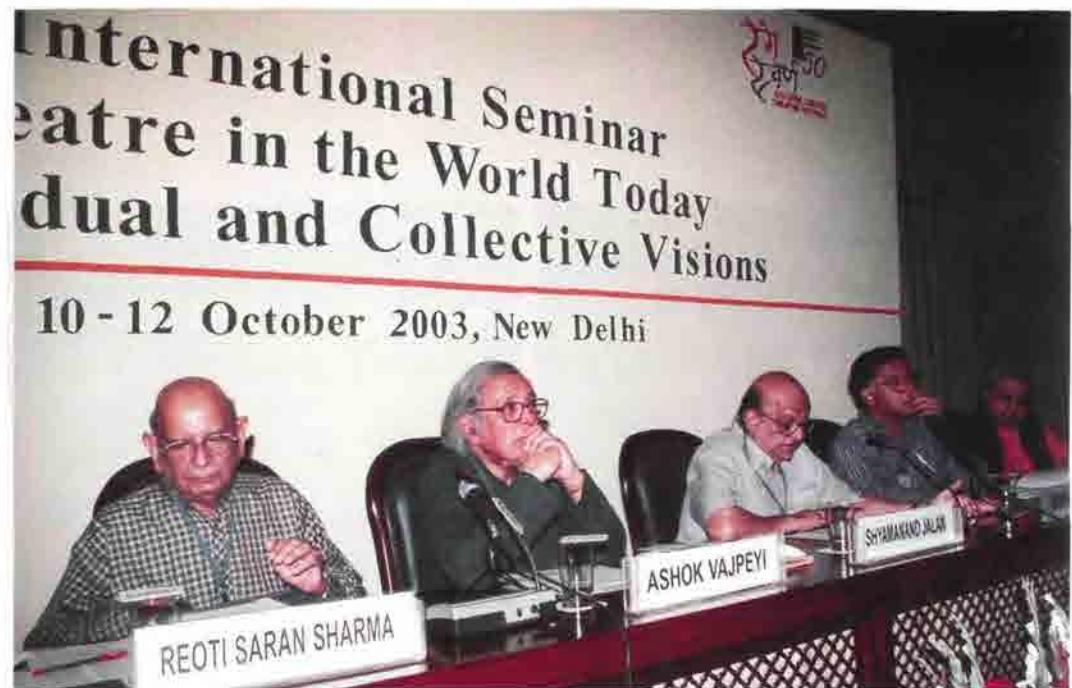
ऊपर : आज की दुनिया में रंगमंच: *रंग स्वर्ण* के अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन
नीचे : रंगरेखा – अकादेमी अभिलेखागार से संकलित रंगमंच-फोटो प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए नेमिचन्द जैन, जयन्त कस्तुआर, सचिव दीप-प्रज्वलन में उनकी मदद कर रहे हैं।

वैजयन्ती माला बाली

उमा शर्मा

र्शना झावेरी

किरण सैगल

मालविका सरुक्कै

कनक रेले
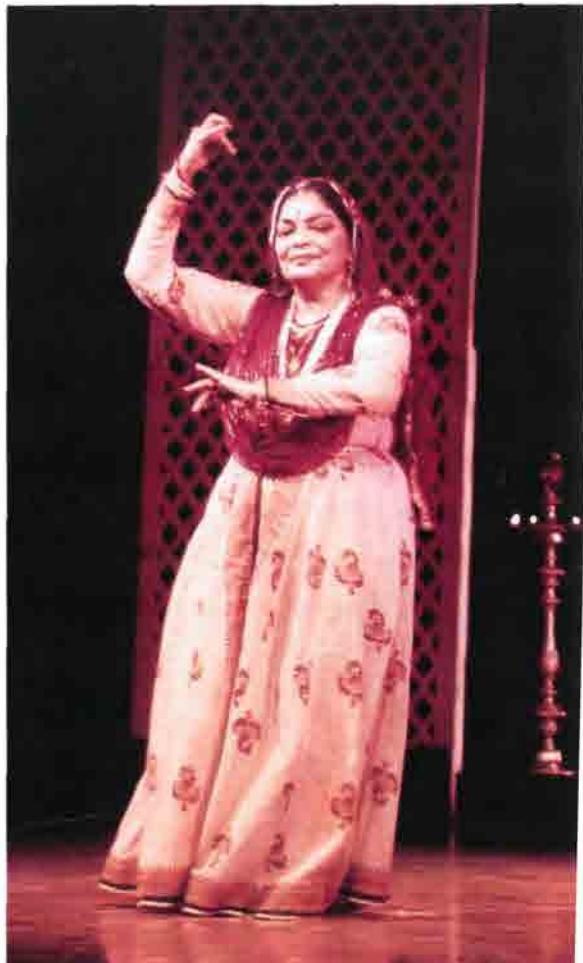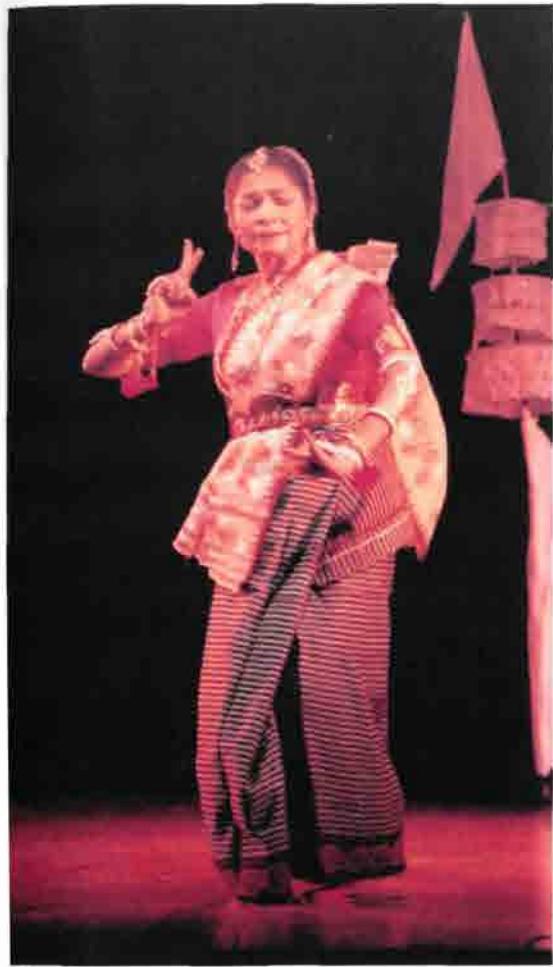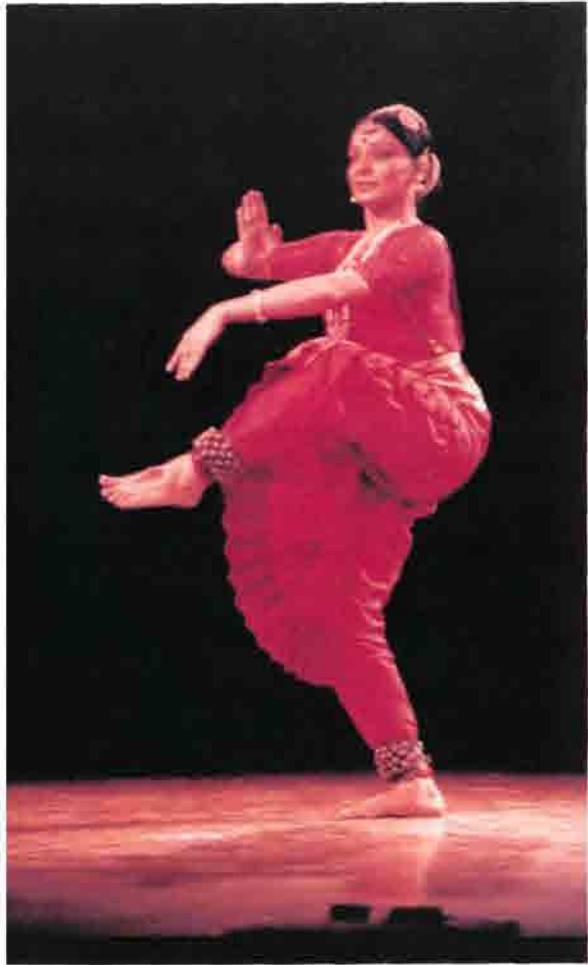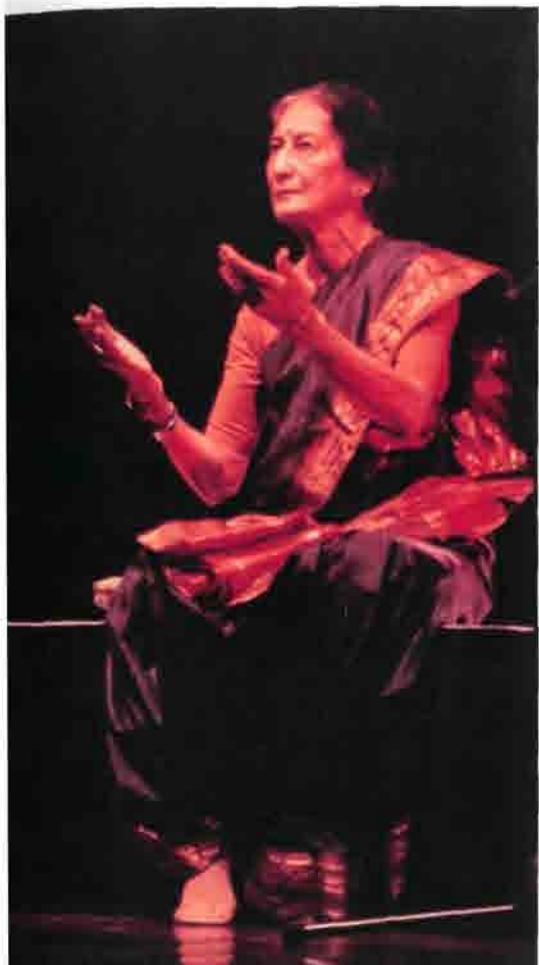
हिणी भाटे

सोनल मानसिंह

ऊपर : नृत्य नाटिका कलाकार
नीचे : समारोह के दौरान प्रदर्शन

ऊपर : आन्ध्र प्रदेश के गवर्नर, सुरजीत सिंह बरनाला, हैदराबाद में संगीत स्वर्ण उत्सव का उद्घाटन करते हुए।
बाएं से तीसरे स्थान पर एम. बालमुरली कृष्ण खड़े हैं।
बाए : संगीत स्वर्ण प्रेसमीट (बाएं से दाएं: चांदना खान, एम. बालमुरली कृष्ण और जयन्त कस्तुआर)

ऊपर : हरी प्रसाद चौरसिया
नीचे : सत्यनारायण और उनका समूह
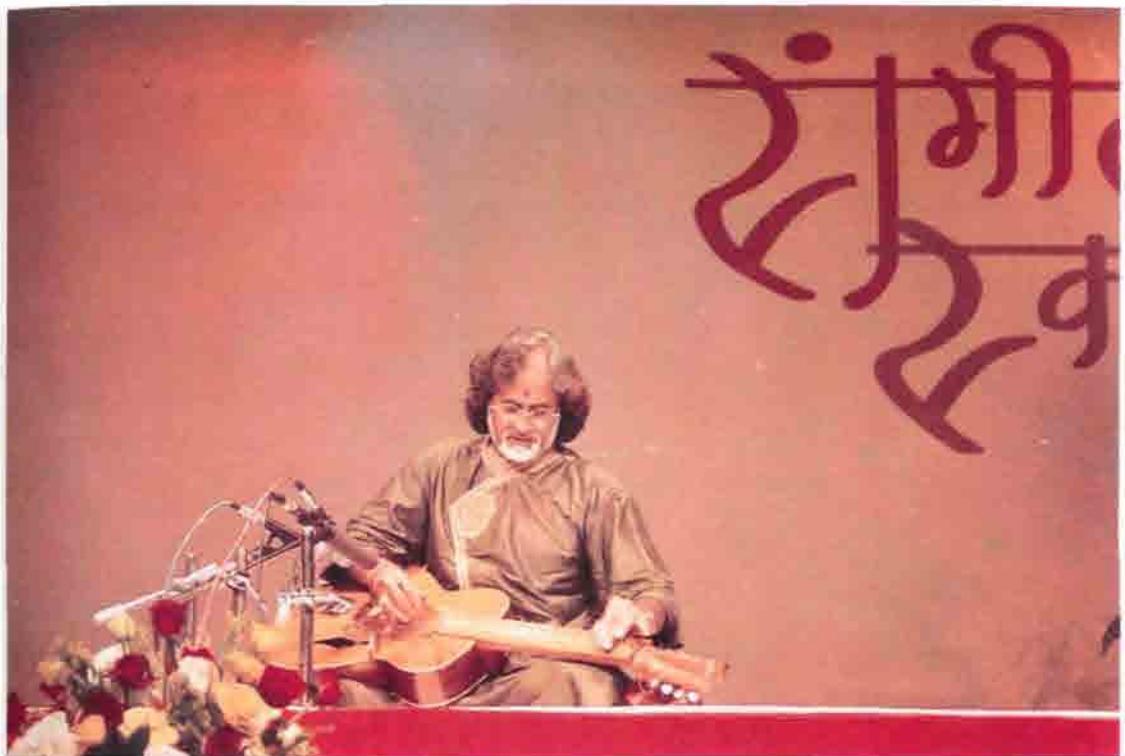
ऊपर : विश्व मोहन भट्ट
नीचे : माला चन्द्रशेखर

संगीत नाटक अकादेमी की डाक टिकट का लोकार्पण

ऊपर : अकादेमी की स्वर्ण जयन्ती के समापन समारोह पर प्रधान मंत्री, अटल बिहारी वाजपेयी डाक टिकट का लोकार्पण करते हुए। बाएं से : अकादेमी की अध्यक्ष सोनल मानसिंह, संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री जगमोहन, प्रधान मंत्री और अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष भूपेन हज़ारिका।
नीचे : समारोह में प्रधानमंत्री कलाकारों के साथ।

संगीत नाटक अकादेमी स्वर्ण जयन्ती समापन समारोह

ऊपर : समारोह में अकादेमी की अध्यक्ष सोनल मानसिंह भारत के उप-राष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत का अभिनन्दन करते हुए।
नीचे : स्टेज पर विद्यमान *(बाएं से दाएं)*: जयन्त कस्तुआर; चनेन्द्र कुमार (सचिव, संस्कृति); सोनल मानसिंह; भैरों सिंह शेखावत; पंडित रविशंकर; श्यामानन्द जालान

बाएं : चंडीगढ़ में आयोजित स्वर्ण नृत्य प्रतिभा में कथकली का प्रदर्शन करते हुए सदानम श्रीनाथन
नीचे : नारायण नृत्यालय समूह पुंग चोलम का प्रदर्शन करते हुए।

ऊपर : रॉयल छऊ अकादेमी द्वारा वड़ोदरा में पुरुलिया के छऊ नृत्य का प्रदर्शन
नीचे : मयूर भंज का छऊ नृत्य

दाएं : शतरूपा चटर्जी और तन्मय चौधरी (गुवाहाटी) सत्रिय नृत्य का प्रदर्शन करते हुए।
नीचे : कोलकाता में जे.एन.एम.डी.ए. द्वारा पुंग चोलम का प्रदर्शन।

ऊपर : तिरुवनन्तपुरम में ओडिसी नृत्य प्रस्तुत करते हुए युधिष्ठिर नायक और लिप्सा दास।
बाएं : समारोह में कथकली पर विशेष संध्या।

इलाहाबाद में आयोजित समारोह में सुधा रघुनाथन का कर्नाटक गायन।

युवा रंग कलाकार कार्यशाला
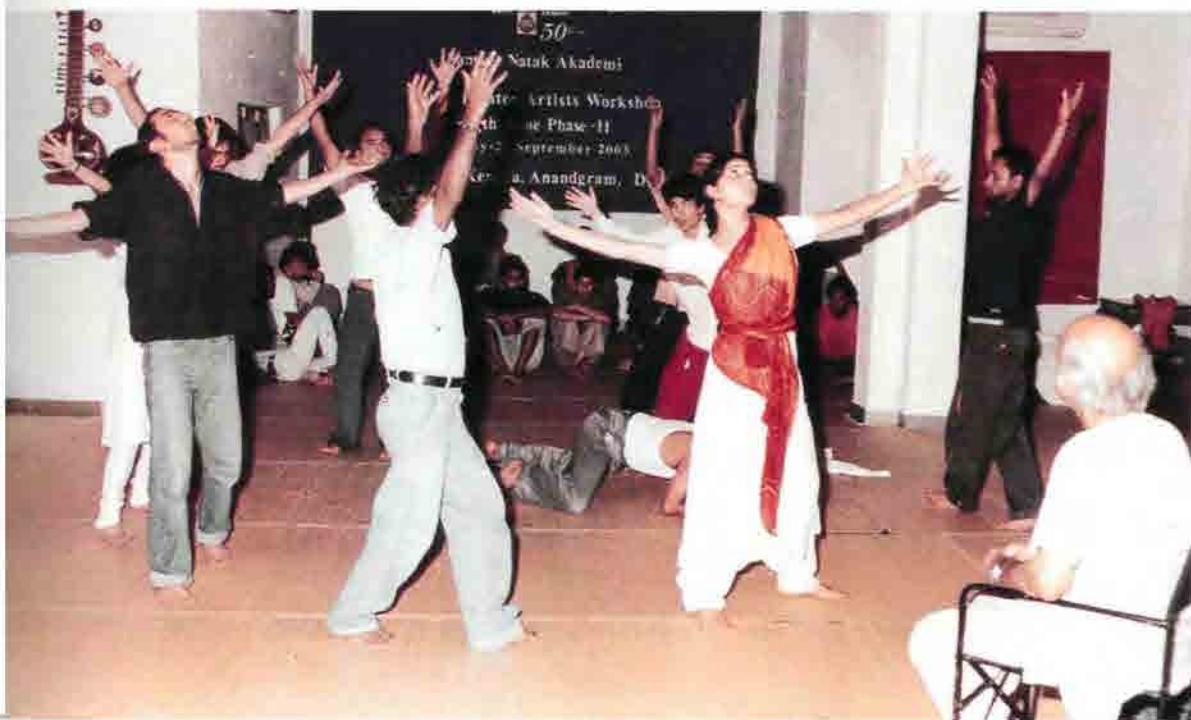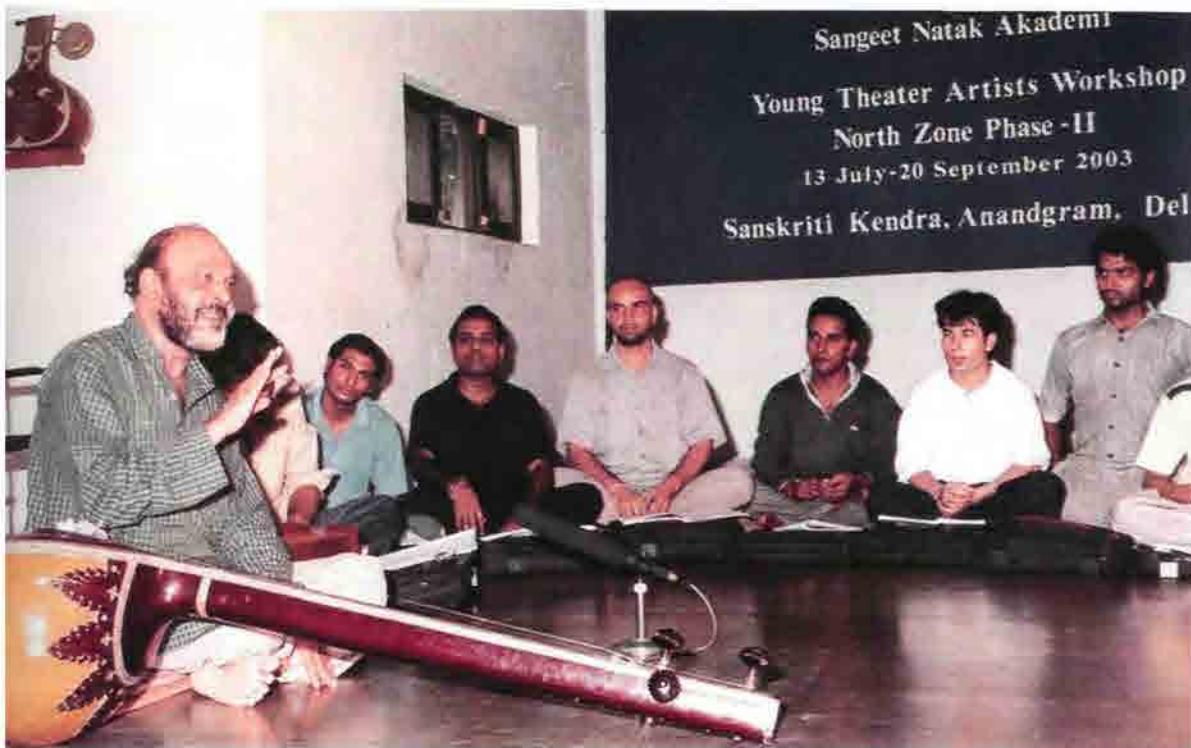
ऊपर : आनन्दग्राम, दिल्ली में आयोजित कार्यशाला में कलाकारों के साथ चर्चा करते हुए संगीतज्ञ भास्कर चन्दावरकर।
नीचे : नृत्य संरचनाकार नरेन्द्र शर्मा कार्यशाला में कला का संचालन करते हुए।